OM - 12 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/08/2021 11:31 AM Page 8

परमात्म ऊर्जा

सफलता प्राप्त करने का साधन...स्मृति

जैसे राजपूत होते हैं, वह जब युद्ध के मैदान में जाते हैं तो भले कैसा भी कमज़ोर हो उनको अपने कुल की स्मृति दिलाते हैं। राजपूत ऐसे-ऐसे होते हैं, ऐसे होकर गये हैं, ऐसे होकर गये हैं, ऐसे-ऐसे करके गये हैं, ऐसे कुल के तुम हो - यह स्मृति दिलाने से उन्हों में समर्थी आती है। सिर्फ कुल की महिमा सुनते-सुनते स्वयं भी ऐसे महान बन जाते हैं। इस रीति आप सूर्यवंशी हो, वो सूर्यवंशी राज्य करने वाले क्या थे? कैसे राज्य किया और किस शक्ति के आधार पर ऐसा राज्य किया? वह स्मृति और साथ-साथ अब संगमयुग के ईश्वरीय कुल की स्मृति। अगर यह दोनों ही स्मृति बुद्धि में आ जाती हैं तो फिर समर्थी आ जाती है। जिस समर्थी से फिर माया का सामना करना सरल हो जाता है। सिर्फ स्मृति के आधार से। तो हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए क्या साधन हुआ? स्मृति से अपने में पहले समर्थी को लाओ। फिर कार्य करो। तो भले कैसा भी कमज़ोर होगा लेकिन स्मृति के आधार से उस समय के लिए समर्थी आ जायेगी। भले पहले वह अपने को उस कार्य के योग्य न समझते होंगे लेकिन स्मृति से वह अपने को योग्य देखकर आगे के लिए उमंग उत्साह में आयेंगे।

याद नहीं तो प्राप्ति का अनुभव नहीं

सदा याद में रहने से जो भी प्राप्ति है, उसका अनुभव कर सकते हो। याद नहीं तो प्राप्ति का अनुभव नहीं। सदा प्राप्ति के नशे में रहो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। शक्तियां बाप की प्रॉपर्टी है तो बच्चे का उस पर अधिकार है।

सदैव एक मंत्र याद रखो - बाप को दिल का सच्चा साथी बनाकर रखेंगे तो सदा अनुभव करेंगे खुशियों की खान मेरे साथ है। सदा इस संग का रूहानी रंग लगा रहेगा। क्योंकि बड़े से बड़ा संग 'सर्वशक्तिवान' का है। सत्संग की महिमा है तो सदा बुद्धि द्वारा सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरू का संग करना- यही 'सत्संग' है। इस सत्संग में रहने से सदा हर्षित और हल्के रहेंगे। किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होगा।

निश्चय बुद्धि हो- यह तो ठीक है। लेकिन निश्चय का रिटर्न है- बाप को सदा का साथी बनाकर रखना। पल-पल बाप का साथ हो। सदा साथ के अनुभव से सम्पन्न का अनुभव करेंगे। ऐसे लगेगा जैसे भरपूर हैं। जब बाप को अपना बनाया तो बाप का जो भी है, सब अपना हो गया।

सदा ईश्वरीय नशे में और भविष्य देवपद के नशे में रहते हो? संगमयुग की प्रालब्ध क्या है? बाप को पाना। और भविष्य की प्रालब्ध देवपद पाना। तो दोनों प्रालब्ध की स्मृति रहती है? जिसको बाप मिल गया उसको नशा कितना होगा, बाप से ऊपर और कुछ नहीं! बाप मिला सब कुछ मिला। सदा याद में रहने से जो भी प्राप्ति है, उसका अनुभव कर सकते हो।

याद नहीं तो प्राप्ति का अनुभव नहीं। सदा प्राप्ति के नशे में रहो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। शक्तियां बाप की प्रॉपर्टी हैं तो बच्चे का उस पर अधिकार है। अधिकारी बच्चों के मन से सदैव यही गीत निकलेंगे जो पाना था पा लिया।

किसी भी प्रकार का विघ्न रास्ते आवे तो निर्विघ्न रहने का तरीका आ गया है? विघ्न को हटाना सहज है वा मुश्किल? जब बाप का साथ छोड़ते तो मुश्किल लगता। अगर बाप साथ रहे तो कोई मुश्किल नहीं। बाप का साथ छोड़ने से कमज़ोर हो जाते। कमज़ोर को छोटी बात भी बड़ी लगती। बहादुर को बड़ी बात भी छोटी लगती। जब बाप साथ देने के लिए तैयार है, लेने वाले न लें तो बाप क्या करे? किनारा नहीं करो तो सदा सहज लगेगा।

कथा सरिता

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है। हम सब लोग यह जानते हैं कि अगर इंसान कोई भी काम को ठान ले तो वह कर सकता है। लेकिन अगर वह काम मन से किया जाये तो और अच्छा होता है। आप लोगों को मैं एक उदाहरण देता हूँ कि जैसे कि रस्सी के बार-बार घिसने से कुएं पर निशान बन जाता है। लेकिन यह काम एक बार करने पर कभी नहीं होता है। इसके लिए आप को लगातार लगना पड़ता है तभी आप कुछ कर सकते हैं।

हिटलर का नाम तो आपने सुना ही होगा, उसने एक बहुत ही अच्छी बात बोली थी कि अगर आप को रेस जीतना है तो पहले उसमें भाग लेना सीखो। जो रेस में पार्टिसिपेट नहीं करता है वो रेस कभी नहीं जीत सकता। हिटलर की बात बिल्कुल सही है, अगर आप जीवन में लड़ना नहीं सीखेंगे तो आप कभी भी जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते।

हम सब में बहुत लोग हैं जो तब तक संघर्ष करते हैं जब तक उनको उनकी मंज़िल नहीं मिल जाती और कुछ लोग हैं जो थोड़ा परेशानी होने पर ही हार मान कर छोड़ देते हैं। जीवन में आप को अपने लिए खुद लड़ना पड़ता है तभी आप कुछ कर सकते हैं, दूसरों के सहारे तो कमज़ोर लोग लड़ते हैं।

जो इंसान अपने जीवन में परेशानी नहीं देखता है वह इंसान जीवन को सही से समझ ही नहीं पाता और कभी जब मुसीबत आती है तो हार मान जाता है। इसलिए इंसान को दोनों पहलू में जीना सीख लेना चाहिए। जीवन में तब तक लड़ो जब तक आप को अपनी मंज़िल मिल न जाये।

एक बार की बात है। एक बड़े पर्वत पर दो चींटियाँ रहती थीं। उन दोनों में से एक पूर्वी चोटी पर और एक पश्चिमी चोटी पर। साथ ही एक का घर शक्कर की खान में था जबकि दूसरी नमक की खान में रहती थी।

एक दिन शक्कर की खान वाली चींटी ने दूसरी चींटी से कहा कि बहन तुम कहाँ इस नमक की कड़वी खान में पड़ी हो- मेरे साथ चलो, वहाँ केवल शक्कर ही शक्कर है। खाकर अपना मुँह मीठा करो और अपने जीवन में भी मिठास लाओ। तुम्हारी बाकी की ज़िंदगी संवर जाएगी।

दूसरी चींटी ने सहर्ष उसका निमंत्रण स्वीकार किया और बड़े सवेरे ही वह पहली चींटी के घर जा पहुँची।

पहली चींटी ने उसे घूम-घूम कर शक्कर की पूरी खान दिखाई और कहा, बहन मन भर शक्कर खाओ, यहाँ किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है, तुम चिंता मत करना।

दूसरी चींटी दिन भर इधर-उधर भागती रही लेकिन उसे कहीं भी शक्कर नहीं मिली। अंत में थक हारकर शाम को पहली चींटी दूसरी चींटी से यह कहकर चली गई कि तुमने मुझे बहुत बड़ा धोखा दिया। यदि शक्कर तुम्हारे पास नहीं थी तो फिर तुमने मुझे निमंत्रण क्यों दिया?

वहीं पास के ही एक आश्रम में एक साधु अपने शिष्य के साथ रहते थे जिन्होंने दोनों चींटियों के पूरे प्रसंग को जान लिया था।

शिष्य ने पूछा- गुरुदेव, शक्कर की खान में घूमने पर भी उस चींटी को शक्कर का पता क्यों नहीं चला? ये बात मेरी समझ में नहीं आई।

साधु मुस्कुराकर बोले, बात यह थी पुत्र कि वह चींटी अपने मुँह में नमक का टुकड़ा दबाए हुए थी और उसी वजह से उसे मिठास का आभास नहीं हो पाया क्योंकि जो लोग अपने कुसंस्कार और गलत आचरण को नहीं त्यागते अथवा आत्म चिंतन द्वारा अपनी बुराइयों को दूर नहीं करते, वे परमात्मा के समीप होते हुए भी उसके प्यार से वंचित रह जाते हैं। इसलिए कुछ नया पाने के लिए पुराना हटाने का नियम अनिवार्य और अटल है।

आवश्यक सूचना

ग्लोबल स्कूल ऑफ नर्सिंग,शिवमणि होम के नज़दीक,तलहटी आबू रोड के लिए 3 नर्सिंग ट्यूटर्स मेल/फीमेल की अतिशीघ्र आवश्यकता है।
योग्यताः मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. नर्सिंग/पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग
कार्यानुभवः नर्सिंग स्कूल/कॉलेज से कम से कम 2 वर्ष का टीचिंग/क्लीनिकल एक्सपीरियंस
संपर्क करें : मो. : 7986387688
ई.मेलः ghsn.abu@gmail.com

भानपुरी। ब्रह्माकुमारीज़ के भानपुरी ग्राम गीता पाठशाला के वार्षिकोत्सव पर हरियाली उत्सव मनाया गया तथा साथ ही दादी प्रकाशमणि जी के पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में ऑक्सीजन देने वाले विभिन्न पौधों का गांव के रोड के दोनों किनारों पर रोपण किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. सरिता दीदी, सरपंच जानकी साहू, पंच कौशल्या साहू, ब्र.कु. योगेश्वरी बहन, रामभरोसा भाई, के.आर. बांकडे जी, पूर्णिमा बहन, रामगोपाल भाई, बी.आर. चंद्राकर, निर्मलकर जी, छबिलाल भाई तथा ग्रामवासी।